

27-10-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन



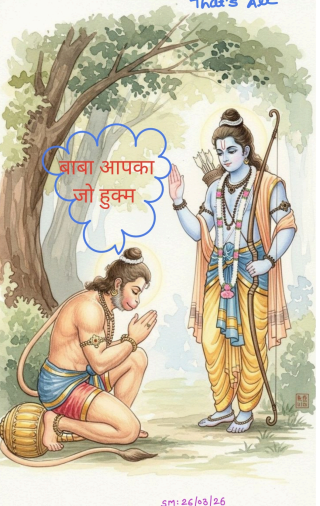
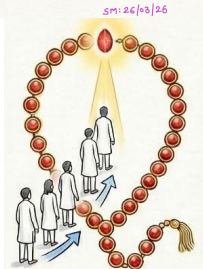
"मीठे बच्चे - अपनी बुद्धि को ज्ञान मंथन में बिजी रखो तो सब फिकरातों से फारिग हो जायेंगे, सदा खुशी बनी रहेगी"



भगवान के सामने कोई भी तर्क नहीं देना है... वो जो कहे उसमें

हाँ बाबा, हाजीर बाबा, अभी बाबा...

That's all



विजयी माला का मणका बनना।

प्रश्न:- जो अपने को शिवबाबा के यज्ञ का सर्वेन्ट समझते हैं उनकी निशानी सुनाओ?

उत्तर:- शिवबाबा इस ब्रह्मा मुख से जो कुछ बोलेंगे, उसे वह फौरन मान लेंगे। जो कहे उसे मानना, इसको ही श्रीमत कहा जाता है। श्री-श्री शिवबाबा की मत पर चलने से ही तुम श्रेष्ठ बनते हो। श्रेष्ठ बनना माना विजय माला में आना।

गीत:- ओम नमो शिवाए.....

Click

ॐ नमः शिवाय
पितु मात सहायक स्वामी सखा
तुम ही सब के रखवारे हो
जिसका कोई आधार नहीं
उसके तुम एक सहारे हो
पितु मात सहायक स्वामी सखा
तुम ही सब के रखवारे हो

तेरी लीला अपरंपार प्रभु
तेरी महिमा सबसे न्यारी है
जब जब धरती पर पाप बढ़ा
तूने ही विपदा ढारी है
इस जीवन के अंधियारे में
बस एक तुम्ही ऊजियारे हो

इक नाम तेरा ही सच्चा है,
बाकी सब जूठी माया है।
जो अपना सब कुछ छोड़ चला,
उसने ही तुमको पाया है।
जिस मन में तुम्हारी भक्ति जगी,
उसके तुम्ही तो सहारे हो।
पितु मात सहायक स्वामी सखा,
तुम ही सब के रखवारे हो।
जिसका कोई आधार नहीं,
उसके तुम एक सहारे हो।

पितु मात सहायक स्वामी सखा,
तुम ही सब के रखवारे हो।

दोनों हाथों में लड्डू चाहने वाले ...
एक तरफ भौतिक दुनिया
(व्यक्ति, वैभव, वस्तु, नाम-मान-शान
ईत्यादि) की लालसा या आकर्षण
मात्र भी हो और
दूसरे तरफ भगवान को भी पाना
हो।
तो वो कभी भी बाबा/भगवान को
पा नहीं सकता। - ये पक्का समझ
लो।



Points: Golden = ज्ञान, Red = योग, Sky Blue = धारणा, Green = सेवा



तेरी लीला अपरंपार प्रभु
तेरी महिमा सबसे न्यारी है
जब जब धरती पर पाप बढ़ा
तूने ही विपदा ढारी है
इस जीवन के अंधियारे में
बस एक तुम्ही ऊजियारे हो

27-10-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन
ओम् शान्ति। शालिग्रामों प्रति शिव भगवानुवाच।
रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बाप समझा रहे हैं। अभी
तुम बच्चे जान गये हो कि हमको यहाँ आत्मा
समझकर बैठना है। सारी दुनिया में एक भी ऐसा
मनुष्य नहीं होगा जो अपने को आत्मा समझते हो।
आत्मा क्या है, यही नहीं जानते तो परमात्मा को
फिर कैसे जानेंगे। बाप द्वारा ही तुमको आत्मा की
समझानी मिलती है कि मूल क्या चीज़ है। मनुष्यों
को कुछ भी पता न होने के कारण कितना दुःखी हैं।
तुम बच्चे जानते हो इस ड्रामा अथवा सृष्टि रूपी
कल्प वृक्ष की आयु 5 हजार वर्ष है। जैसे आम का
बीज है, वह चैतन्य होता तो समझाता कि हम बीज
हैं, हमसे यह झाड़ ऐसे निकला। परन्तु वह है जड़।
चैतन्य झाड़ एक ही है। शुरू से लेकर अन्त तक इस
सारे झाड़ का तुमको ज्ञान मिला हुआ है। नम्बरवार
पुरुषार्थ अनुसार समझ सकते हो। बाप कहते हैं मैं
इस मनुष्य सृष्टि का बीज सत चित आनंद स्वरूप
हूँ। मुझे ज्ञान का सागर कहा जाता है। यह निराकार
के लिए महिमा है। तुम जानते हो बाप की यह
महिमा सबसे न्यारी है। मनुष्य तो बाप की महिमा
को बिल्कुल ही नहीं जानते। भल यह लक्ष्मी-

But we know, How Lucky & Great we are..!



नारायण आदि देवतायें हैं। उन्हों को भी यह नॉलेज नहीं है। यह ड्रामा का ज्ञान तुमको मिला है। तुम जानते हो यह सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है फिर देवता बनेंगे तो यह ज्ञान रहेगा नहीं। वन्दर है ना। तुम इस ड्रामा के एक्टर्स हो ना। तुमको रचता और रचना के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान है। बाकी न शूद्र वर्ण को, न देवता वर्ण को यह ज्ञान है। ऐसे नहीं कि ज्ञान परम्परा चलता है। जैसे त्योहारों के लिए कहते हैं परम्परा से चलते आये हैं। अभी तुम समझते हो सतयुग में तो इन त्योहारों को कोई जानते ही नहीं। वहाँ कुछ भी याद नहीं रहेगा। वहाँ तो राज्य करते हैं। तुम हर एक की बुद्धि का ताला खुला हुआ है। मुख्य क्रियेटर, डायरेक्टर, प्रिन्सीपल एक्टर को तुम जानते हो। तुमको कितनी अच्छी नॉलेज मिलती है, इस नॉलेज को जो नहीं जानते हैं, वह हैं बेसमझ। तुम भी बेसमझ थे। अब देवता बन रहे हो। यह नॉलेज जिसकी बुद्धि में टपकती रहेगी उनको अपार खुशी होगी। तुम्हारे सिवाए कोई नहीं जो यह नॉलेज समझ सके। गॉड फादर को ही वर्ल्ड आलमाइटी अथॉरिटी, नॉलेजफुल कहा जाता है, नॉलेज किसकी है? सभी वेदों शास्त्रों, सृष्टि के आदि मध्य अन्त की

चढ़ाओ नशा...

How lucky and Great we are...!

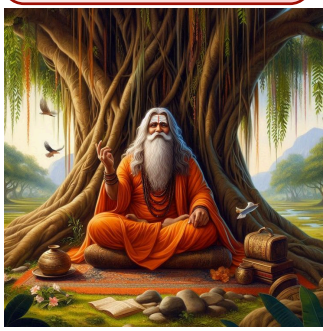
हों जी मेरे मीठे ते मीठे बाबा...



जी मेरे मीठे बाबा...

चढ़ाओ नशा...

How lucky and Great we are...!



नॉलेज उसको है। शास्त्रों में भी रचता और रचना की नॉलेज नहीं है, तब तो ऋषि मुनि आदि कहते आये हैं हम रचता और रचना को नहीं जानते हैं। समझाने वाला एक ही है तो और कोई जानेंगे कैसे। यह नॉलेज सिवाए तुम बच्चों के कोई दे न सके। तुमको देने वाला फिर है बाप। वह कितना बड़ा नॉलेजफुल है। कितना तुम मर्तबा पाते हो। कितनी खुशी होनी चाहिए। हम बेहद के बाप की सन्तान हैं। ज्ञान से बुद्धि भरपूर होनी चाहिए। ऐसी कोई चीज़ नहीं जिसको तुम नहीं जानते हो। अभी तुम मास्टर नॉलेजफुल बन रहे हो। जो आत्मा तमोप्रधान बनी है वह बाप को याद करते-करते सतोप्रधान बन जायेगी। नम्बरवार तो होते हैं ना। कोई की तमो से रजो बुद्धि बनी होगी, कोई की रजो से सतो बनी होगी। अभी सतोप्रधान बुद्धि किसकी है नहीं। सतोप्रधान जब बन जायेगी तब तुम्हारी कर्मातीत अवस्था हो जायेगी। फिर तो नई दुनिया चाहिए - राज्य करने के लिए। यह यज्ञ जब पूरा होता है तब इसमें सारी पुरानी दुनिया की आहुति पड़ जाती है। फिर पढ़ाई भी पूरी हो जाती है - नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। जैसे स्कूल में स्टूडेंट समझते हैं हम यह

How lucky and Great we are...!



27-10-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

इम्तहान पास कर फिर उस क्लास में ट्रांसफर होंगे।

तुम्हारी भी जब कर्मातीत अवस्था होगी तो इस

मृत्युलोक से ट्रांसफर हो अमरपुरी में चले जायेंगे।

तुम जानते हो - अभी यहाँ से ट्रांसफर होने का है।

पवित्र होकर अमरलोक में चले जायेंगे। असुल हम

शान्तिधाम के रहवासी थे फिर पार्ट बजाते-बजाते

अमरलोक से मृत्युलोक में आकर पहुँचे हैं। तो यह

सारी नॉलेज बुद्धि में रहने से खुशी रहेगी। सिवाए

नॉलेज के और कुछ सूझेगा ही नहीं। अभी हम

पढ़कर नई दुनिया के मालिक बनेंगे, यह भी

समझाना चाहिए। यहाँ हैं ही पतित। देवता तो कोई

है नहीं। मनुष्य से देवता कौन बनायेगा? बाप ही बना

सकते हैं। अभी तुम समझा सकते हो बरोबर स्वर्ग

था, जिसमें लक्ष्मी-नारायण का राज्य था। उसकी

स्थापना किसने की? हेविनली गॉड फादर ने

पैराडाइज स्थापन किया। जहाँ देवी-देवता राज्य

करेंगे तो और कोई धर्म नहीं होगा। यह बड़ा बेहद

का नाटक है। तुम चैतन्य हो ना। जानते हो इस झाड़

का बीज ऊपर में है। बाप भी इम्पेरिशबल अविनाशी

है। तुम भी इम्पेरिशबल हो। अभी सारा झाड़

जड़जड़ीभूत अवस्था को पाया है। इस समय सब



★ सतोप्रधान
↓
★ सतो
↓
★ रजो
↓
★ तमो
↓
★ तमोप्रधान

ॐ
अथ पञ्चदशोऽध्यायः
श्रीभगवानुवाच
ऊर्ध्वमूलमधःशाखमश्वत्थं प्राहुरव्ययम्।
छन्दांसि यस्य पर्णानि यस्तं वेद स वेदवित्॥
श्रीभगवान् बोले—आदिपुरुष परमेश्वररूप मूलवाले^१
और ब्रह्मरूप मुख्य शाखावाले^२ जिस संसाररूप
पीपलके वृक्षको अविनाशी^३ कहते हैं, तथा वेद
१. आदिपुरुष नारायण वासुदेवभगवान् ही नित्य और
अनन्त तथा सबके आधार होनेके कारण और सबसे ऊपर
नित्यधाममें सगुणरूपसे वास करनेके कारण ऊर्ध्व नामसे कहे
गये हैं और वे मायापति, सर्वशक्तिमान् परमेश्वर ही इस संसाररूप
वृक्षके कारण हैं, इसलिये इस संसार-वृक्षको 'ऊर्ध्वमूलवाला'
कहते हैं।
२. उस आदिपुरुष परमेश्वरसे उत्पत्तिवाला होनेके कारण तथा
नित्यधामसे नीचे ब्रह्मलोकमें वास करनेके कारण, हिण्यगर्भरूप
ब्रह्मको परमेश्वरकी अपेक्षा 'अधः' कहा है और वही इस संसारका
विस्तार करनेवाला होनेसे इसकी मुख्य शाखा है, इसलिये इस
संसारवृक्षको 'अधःशाखावाला' कहते हैं।
३. इस वृक्षका मूल कारण परमात्मा अविनाशी है तथा
अनादिकालसे इसकी परम्परा चली आती है, इसलिये इस
संसारवृक्षको 'अविनाशी' कहते हैं।
* अध्याय १५ *

जिसके पते^१ कहे गये हैं—उस संसाररूप वृक्षको
जो पुरुष मूलसहित तत्त्वसे जानता है, वह वेदके
तात्पर्यको जाननेवाला है^२॥ १॥

Points: Golden =

what are other
words for
imperishable?

indestructible, immortal,
everlasting, enduring, eternal,
perennial, permanent, undying,
abiding, perpetual

/ Blue= धारणा, Green = सेवा





27-10-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

मनुष्य काँटें मिसल बन गये हैं। काँटों का जंगल है ना। सब एक दो को दुःख देने वाले हैं। बाप ही बागवान है, उनको खिवैया भी कहते हैं। तुम भी बोट चलाने सीख रहे हो। हर एक की नईया पार कैसे हो, सो तुमको बैठ समझाते हैं। नईया कोई शरीर नहीं है। नईया आत्मा और शरीर दो चीज़ की बनी हुई है। गाते भी हैं नईया मेरी पार लगाओ। अभी आत्मा भी पतित है तो शरीर भी पतित है। अब पार कैसे हो, और कहाँ जाये? अभी तुम मूलवतन, सूक्ष्मवतन... सतयुग से लेकर कलियुग तक सब राज़ों को जान गये हो। फिर भी बुद्धि में यह क्यों नहीं रहता! तुम भूल क्यों जाते हो? सदैव बुद्धि में यह टपकता रहे तो तुम खुशी में रहेंगे, फिकर से फारिग हो जायेंगे।

वाह रे मैं...



मेरे बाबा मुझे लेने आये हैं...
हो गई है शाम चलो लौट चले घर....

तुम जानते हो बाबा आया हुआ है, हमको ले जाने। जो नॉलेज बाप में है वह हमको दे रहे हैं। यह हैं बिल्कुल नई बातें, जो बाप के सिवाए और कोई समझा नहीं सकते। निराकार बाप साकार द्वारा सुनाते हैं। तुम भी इस शरीर के द्वारा सुनते हो। तो

Exclusive Authority of Shiv baba



Points: Golden = ज्ञान, Red = योग, Sky Blue = धारणा, Green = सेवा

बाप तुम बच्चों को भी आप समान बनाते हैं। जो

बाप की महिमा वह तुम्हारी भी होनी चाहिए। कोई

फ़र्क नहीं है। सिर्फ बाप कहते हैं - हम जन्म-मरण में

नहीं आता हूँ, तुम जन्म-मरण में आते हो। तुम मुझे

कहते हो ज्ञान का सागर, सुख का सागर... तो जरूर

मैं तुमको ज्ञान दूँगा, कल्प-कल्प देता हूँ। तुम समझ

गये हो बरोबर 84 का चक्र खाए अभी हम अन्त में

हैं। फिर बाप हमको पहला नम्बर में ले जाते हैं। यह

नॉलेज है ना। नॉलेज है सोर्स ऑफ इनकम। जो

जितना-जितना पढ़ता है, उनकी इनकम वैसी होती

है। यह नॉलेज भी है, धन्धा भी है। तुम कूड़ा-किचड़ा

देते हो बाबा को। जब कोई मरता है तो करनीघोर

को देते हैं ना। यहाँ तुमको जीते जी देना है। वास्तव

में बात अभी की है। बाप कहते हैं - तुम्हारे पास जो

कुछ है, मरने से पहले दे दो। तुम ट्रस्टी बन जाओ।

नहीं तो तुम्हारे पास जो पड़ा होगा वह अन्त में याद

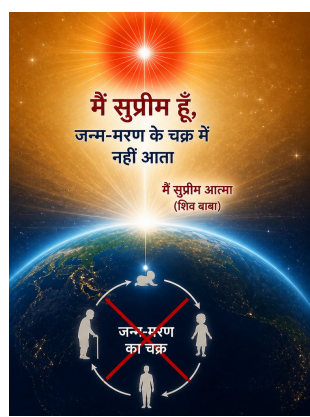
आयेगा। जैसे कोई साहूकार आदमी है, वह ज्ञान

नहीं लेंगे। उनकी साहूकारी भी एक जन्म के लिए है

ना। शरीर तो छोड़ ही देंगे, पता नहीं कर्मों अनुसार

कहाँ जाकर जन्म लेंगे। तुम तो जानते हो हम अभी

जितना पुरुषार्थ करेंगे उतना प्रालब्ध पायेंगे। इस



Most imp
Point to ponder deeply...



Example - Just for understanding (सिर्फ कर्मों की गुह्य गति समझने के लिए उदाहरण)
अगर इस आत्मा ने अपने जीवन के दौरान अच्छे कर्म किए होंगे तब तो कहीं अच्छा जन्म मिलेगा।
परंतु मान लो अपने पैसों के बलबूते पर शेयर मार्केट को मैनिपुलेट करके सिर्फ अपने फायदे के लिए अनेक
इनवेस्टर आत्माओं को नुकसान पहुंचाया होगा (कई आत्माओं को तो आत्म हत्या की भी नौबत आ जाती है)
फिर तो यह आत्मा हम जो शहरों में झोपड़पट्टी देखते हैं, वहां कहीं जन्म लेना पड़ सकता है with
physical disabilities too.
31000 से 35000 करोड़ की संपत्ति में से एक रुपया भी साथ नहीं ले जा सकते।

ed = योग, Sky Blue = धारणा, Green = सेवा

27-10-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

समय हैं सब जिस्मानी सर्विस करने वाले। रूहानी

सर्विस को कोई जानते ही नहीं। सुप्रीम रूह आकर

तुमको नॉलेज समझाते हैं। वह है सुख का सागर,

दुःख हर्ता सुख कर्ता। उनकी शिव जयन्ती भी मनाते

हैं, परन्तु बुद्धि में नहीं आता है। अभी तुम्हारी बुद्धि

में यह ज्ञान है कि बाबा हमको फिर 5 हजार वर्ष

बाद आकर सुनायेंगे। सतयुग में यह ज्ञान नहीं होगा

तो कलियुग में फिर कहाँ से आयेगा। दुनिया में यह

कोई नहीं जानते कि लक्ष्मी-नारायण का मन्दिर हम

क्यों बनाते हैं। यह कौन थे, इन्हों को यह राज्य

किसने दिया? यह कर्मों का फल है ना। बाप बैठ

अभी तुमको कर्म, अकर्म, विकर्म की गति समझाते

हैं। भगवानुवाच है ना। गीता से ही आदि सनातन

देवी-देवता धर्म की स्थापना होती है। वहाँ मनुष्य

थोड़े होते हैं। बाकी सब जरूर मुक्ति को पाते होंगे।

महाभारत लड़ाई भी लिखी हुई है, बहुत आफतें

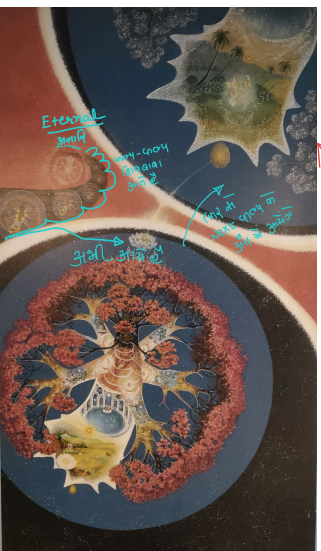
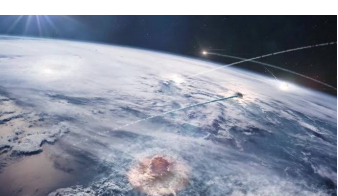
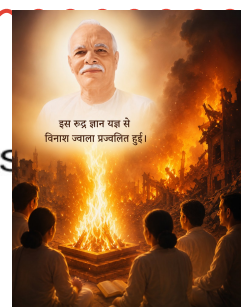
आयेंगी। नेचुरल कैलेमिटीज़ आयेगी। पुरानी दुनिया

खत्म होगी। यह वही बॉम्बस, मिसाइल्स हैं, यह वही

विनाश का समय है जबकि भगवान ने आकर रूद्र

ज्ञान यज्ञ रचा था, जिससे विनाश ज्वाला निकली।

Next chary on 31st मे



Points: Golden = ज्ञान, Red = योग, S, गा, Green = सेवा

27-10-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

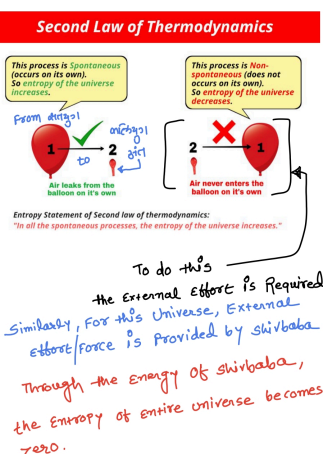


भगवान यज्ञ रचते हैं सुख-शान्ति के लिए। बाकी दुःख अशान्ति का जरूर विनाश होना चाहिए। इस ईश्वरीय ज्ञान यज्ञ में सारी सृष्टि स्वाहा हो जायेगी। यह बातें तुम्हारी बुद्धि में हैं।



हम ब्राह्मण हैं। इस शिवबाबा के यज्ञ में हम ब्राह्मण सर्वेन्त हैं। हम हैं सच्चे-सच्चे मुख वंशावली ब्राह्मण। तुम बच्चों को बाप जो मुख से कहे वह मानना चाहिए। श्रीमत पर ही हमको चलना है। यह भी तुम जानते हो श्री-श्री शिवबाबा की मत पर हम श्रेष्ठ बनकर माला के दाने बनेंगे। माला के दाने कहा जाता है सिजरे को। सिजरा होता है ना फिर वह बढ़ता जाता है। बाबा ने खुद सिजरा बनाया है, यह भी सिजरा है। ऊपर में है निराकारी शिवबाबा, फिर हैं आत्मायें। निराकारी सिजरा फिर साकारी होता है।

पहले-पहले नम्बर में है प्रजापिता, वह जिस्मानी वह रूहानी। रूहानी बाप आकर प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा रचते हैं। कहते भी हैं पतित दुनिया को आकर पावन बनाओ। प्रलय तो कभी होती नहीं। वर्ल्ड की हिस्ट्री



Points: Golden = ज्ञान, Red = योग, Sky Blue = धारणा, Green = सेवा



27-10-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

जॉग्राफी रिपीट होती है। पुरानी दुनिया सो फिर नई बनती है। अभी तुम पुरुषार्थ कर रहे हो नई दुनिया के लिए। यह बेहद की नॉलेज बेहद का बाप ही देते

हैं। हद का वर्सा होते भी बेहद के बाप को याद करते

हैं। हे भगवान कहते हैं ना। जब कोई मरते हैं तो

कहते हैं - गॉड फादर को याद करो तो दो फादर

सिद्ध होते हैं ना। सभी आत्मायें ब्रदर्स हैं। आत्मा ही

पुकारती है हे दुःख हर्ता सुख कर्ता, हे लिबरेटर

आओ, हमको घर जाने के लिए गाइड करो। हमको

घर याद है परन्तु जा नहीं सकते क्योंकि माया ने

पंख तोड़ डाले हैं। कोई घर वापिस जा नहीं सकते।

अभी तुमको अपनी ज्योत को आपेही जगाना है।

बाप को याद करने से घृत पड़ जायेगा। ज्योत

एकदम बुझ नहीं सकती। कोई मरता है तो दीवा

जगाते हैं। खास वहाँ एक मुकरर रखते हैं कि इसमें

घृत डालते जाओ, नहीं तो अन्धियारा हो जाए। अभी

तो तुमको योगबल से घृत डालना है तो घोर

अन्धियारे से सोझरा, दीप माला हो जायेगी।

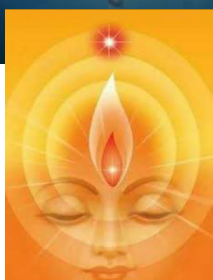
दीपमाला सतयुग में होगी। यहाँ नहीं। उत्सव जो भी

मनाये जाते हैं, उनका भी रहस्य तुमने समझा है। वह

तो कुछ भी समझते नहीं। फिर भी समझाया जाता



Hence, it is Proved

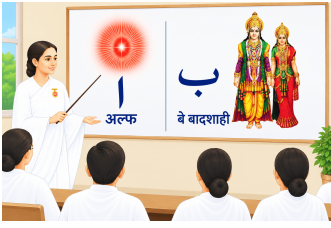


How Lucky we are...!

Points: Golden = ज्ञान, Red = योग, Sky Blue = धारणा, Green = सेवा

27-10-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

पाते हो। ईश्वर तुमको योग सिखाए राजाई का वर्सा देते हैं। तुमको राज्य किसने दिया? बाप ने। बाप कहते हैं - अल्फ को याद करो। बाप और वर्से को याद करो तो पाप कटते जायेंगे। यह तो बहुत सहज है। तुम्हारी बुद्धि में कितना ज्ञान है। भगवान के बच्चे मास्टर गॉड ठहरे। बाप के पास बैठ थोड़ेही जाना है। हमको तो पार्ट बजाना है, इसमें देही-अभिमानी बनना है। अच्छा!



How lucky and Great we are...!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।



मीठी मुरली मेरे प्रियतम का प्रेम से भरा पत्र.



Points: Golden = ज्ञान, Red = योग, Sky Blue = धारणा, Green = सेवा

27-10-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन
धारणा के लिए मुख्य सार:-



1) बाप जो ज्ञान देते हैं, उसका ही सदैव मंथन करना है। युक्ति से बातें करनी है। बहुत प्यार से समझाना है।

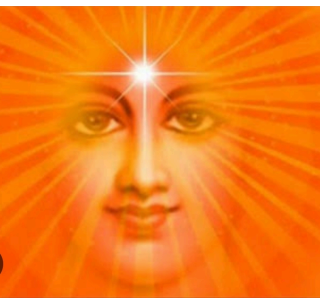


2) अपने पास जो कुछ है वह जीते जी बाप को देकर ट्रस्टी बन एक बाप को याद करना है।

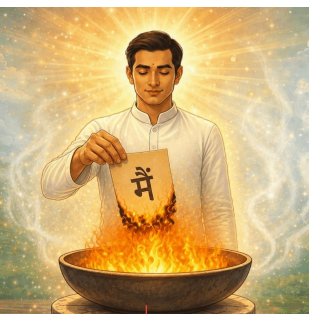
27-10-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन



वरदान:- देह-अभिमान के मैं पन की सम्पूर्ण आहुति डालने वाले धारणा स्वरूप भव



जब संकल्प और स्वप्न में भी देह-अभिमान का मैं पन न हो, अनादि आत्मिक स्वरूप की स्मृति हो। बाबा-बाबा का अनहद शब्द निकलता रहे तब कहेंगे धारणा स्वरूप, सच्चे ब्राह्मण।



मैं पन अर्थात् पुराने स्वभाव, संस्कार रूपी सृष्टि को जब आप ब्राह्मण इस महायज्ञ में स्वाहा करेंगे तब इस पुरानी सृष्टि की आहुति पड़ेगी।



तो जैसे यज्ञ रचने के निमित्त बने हो, ऐसे अब अन्तिम आहुति डाल समाप्ति के भी निमित्त बनो।



स्लोगन:- स्वयं से, सेवा से और सर्व से सन्तुष्टता का सर्टीफिकेट लेना ही सिद्धि स्वरूप बनना है।

Points: Golden = ज्ञान, Red = योग, Sky Blue = धारणा, Green = सेवा

ये अव्यक्त इशारे

परोपकार की भावना से सम्पन्न बन

अपकारी पर भी उपकार करो

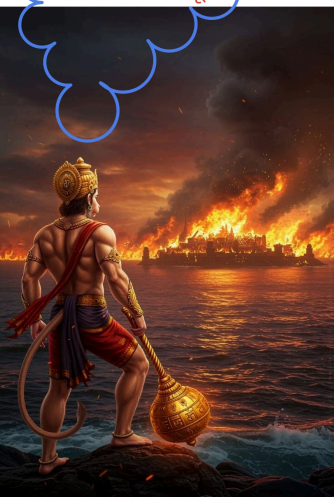


योगी जीवन की ऊंची मंजिल को प्राप्त करने वाली
आत्मा निंदा को स्तुति में, ग्लानि को गायन में,
ठुकराने को सत्कार में, अपमान को स्व-अभिमान में,
अपकार को उपकार में परिवर्तित कर बाप समान
सदा विजयी, अष्ट रत्न और भक्तों के इष्ट बनो।

यह भावना नहीं रखो कि यह भी तो कुछ बदले, तो
मैं बदलूं, यह लेने की भावना है। समझा?

मुझे बायब्रेशन देना है। मुझे रहमदिल बनना है। मुझे
गुणों का, शक्तियों का सहयोग देना है, इसमें मास्टर
दाता, फ्राक-दिल बनो।

चाहे कोई करे ना करे..
मेरे मीठे बाबा
I will crush entire Army
of Maya Ravan
Single handedly..
मैं आपका Right Hand
महावीर बच्चा हूँ..



If you wish to stay connected, Here is the link



BKdrluhar

Mind maps are Available on WhatsApp and Telegram Only

अव्यक्त बापदादा:

वरदान का फल निकालने के लिए बार-बार वरदान को स्मृति में लाओ। स्मृति स्वरूप के स्थिति में स्थित रहो।

AV: 30/11/2009

Revise: 12/4/26

All वरदान slogans Sept 26

Click

All अव्यक्त इशारे Sept 26

Click

All वरदान, slogans and अव्यक्त इशारे At Single place

Click

अव्यक्त बापदादा:

आजकल के जमाने के हिसाब से तो बातें बहुत बदलती जाती हैं। गवर्मेन्ट के कायदे भी बदलने हैं, मनुष्यों की वृत्ति भी बदलनी है। तो हर एक के जीवन में व्यर्थ बातें तो आनी ही हैं, तो व्यर्थ को समाप्त करने के लिए समर्थ संकल्प चाहिए। वेस्ट को खत्म करने के लिए बेस्ट संकल्प चाहिए। तो रोज की मुरली में जो वरदान, स्लोगन आता है उसे सुनो। यह वरदान ही श्रेष्ठ संकल्प है। जब व्यर्थ आवे तो श्रेष्ठ संकल्प मन को चाहिए। मन खाली नहीं रह सकता है। मन को कुछ न कुछ संकल्प चाहिए। तो व्यर्थ वेस्ट को बेस्ट करने के लिए आपको यह वरदान और स्लोगन आदि के शब्द मन को चेंज करने के लिए चाहिए।

Remedy

AV: 15/03/2010

Revise: 31/05/2026

Subtle Psychology

अभी बापदादा ने देखा कि बच्चों को माया भी अब तक छोड़ती नहीं है उनका भी प्यार है।

और आजकल दो रूपों में विशेष माया भी चांस लेती है। दो रूप में आती है - एक व्यर्थ संकल्प और दूसरा कहीं-कहीं कभी कभी यह भी लहर है जो मैंने किया वा सोचा मैं ही राइट हूँ मैं कम नहीं हूँ। यह लहर फैली हुई है - मैं ही राइट हूँ लेकिन जो कनेक्शन में आते हैं या निमित्त बने हुए हैं वह भी आपके विचार को साथ देते हैं! दूसरों की भी वेरीफिकेशन मिलनी चाहिए।

Attention Please..!

यह व्यर्थ संकल्प टाइम वेस्ट करते हैं। इसलिए बापदादा रोज की मुरली मनन करने के लिए सेवा करने के लिए होमवर्क में रोज देते हैं। अगर मनन करो या मनन करते-करते मगन हो जाओ तो यह रोज का होमवर्क मन को बिजी करने का साधन है।

Example

सुनना और मनन करना या मगन हो जाना यह बापदादा रोज का होमवर्क इसीलिए देता है। जैसे बच्चों को होमवर्क इतना ज्यादा दे देते हैं जो उनकी बुद्धि करने में बिजी रहे। ऐसे रोज की मुरली उसमें चार ही सबजेक्ट का होमवर्क है। मन्सा का भी है वाणी का भी है कर्म का भी अटेन्शन और दिव्यता का इशारा होमवर्क है। तो होमवर्क में बिजी रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प के आने की मार्जिन नहीं रहेगी।

समझा?

इस विधि को अपनाते रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प स्वतः ही आपसे विदाई ले जायेंगे

क्योंकि बापदादा ने देखा याद की यात्रा पर सभी का नम्बरवार अटेन्शन है बाचा सेवा में भी अटेन्शन है। लेकिन अभी अपने संस्कार या दूसरों के संस्कार को परिवर्तन करना यह स्वभाव संस्कार जिसको रॉयल रूप में आप कहते हो नेचर मेरी नेचर है भाव नहीं है नेचर है यह धारणा की सबजेक्ट अभी भी रॉयल रूप में आती रहती है। तो बापदादा आजकल यही इशारा देते हैं कि जो भी धारणाओं में कमी होती है उसको अभी विशेष अटेन्शन दो।

AV: 24/10/2010

Revise: 14/06/2026



अमृतवेला और साकार बापदादा के महावाक्य

12.3.2. रात को सोने की विधि और उससे फायदा:



(अ) बाबा कहते हैं लक्ष्मी-नारायण के चित्र के सामने जाकर बैठो। रात को भी बैठ सकते हो। इन लक्ष्मी-नारायण को देखते-देखते सो जाओ। “अहो! बाबा हमें ऐसा बनाते हैं!” तुम ऐसा अभ्यास करके देखो कितना मजा आता है! फिर सुबह को अपना अनुभव सुनाओ।



(आ) कई बार कहा है — रात को जब सोते हो, तो आधा घण्टा बाप की याद में बैठ जाना चाहिए। कम से कम आधा घण्टा याद में बैठो, फिर सवेरे उठ कर याद करो तो अवस्था अच्छी रहेगी। रात को बाबा की याद में बैठने का नियम रखो तो बहुत अच्छा है। योग में रहने वालों को बाबा मदद भी देते हैं। आपे ही आँखें खुल जायेंगी। खटिया हिल जायेगी। बाबा बहुतों को उठाते हैं। रात को बाबा की याद में सोयेंगे तो सुबह को बाबा आकर खटिया हिलायेंगे। ऐसा भी बहुत अनुभव लिखते हैं। हिम्मत बच्चे मददे बाप तो है ही। अपने ऊपर अटेन्शन रखो। बेहद का बाप कितना रहम करते हैं! बाप की मदद अनुभव करने के लिए मोस्ट बिलवेड बाप को बड़े प्यार से याद करना है।



(इ) बच्चे, यह भी कायदा है जास्ती खाने वाले को जास्ती नींद आयेगी। याद में रहेंगे तो खुशी में खाना भी बहुत थोड़ा खायेंगे। नींद भी बच्चों को टाइम पर करनी चाहिए।